RAJYA SABHA

Tuesday, the 11th April 1972/22nd Chaitra, 1894 (Saka)

The House met at eleven of the clock, Mr. CHAIRMAN in the Chair.

MEMBERS SWORN

Andhra Pradesh

1. Shri Papi Reddi.
2. Shri Kota Punnaiah.
3. Qosim Aliabid.

Assam

4. Shri Nripati Ranjan Choudhvry.

Bihar

5. Shri Sayamlal Gupta.
6. Shrimati Jahanara Jaipal Singh.

Madhya Pradesh

7. Shri Mahendra Bahadur Singh.

Mysore

8. Shri Maqsood Alikhan.
9. Shri H. S. Narasiah.

MR. CHIARMAN : Those Members who come later in the day may take their oath or affirmation before the House adjourns

---

WELCOME TO NEW MEMBERS

MR. CHAIRMAN : Before we take up the questions, I would like to extend a very cordial welcome to the new Members.

Some of the Members have just taken the pledge to bear true faith and allegiance to the Constitution and to uphold the sovereignty and integrity of the country. Whatever their political affiliations may be, Members have to work for the social and economic progress of the country through Parliamentary methods. In Parliament, Members have ample opportunities to express their views and I have no doubt that they will, by their contribution, further the ideals of justice to which we are all pledged.

This House has always been a followship in which Members feel mutual regard, goodwill and forbearance towards each other and work in a cooperative spirit for the realisation of our objectives. We have in this House a rich tradition and a standard of conduct which any Parliament can be proud of. It is our duty to preserve this tradition. Every Member who is chosen to this House carries with him the nation's trust which imposes great responsibilities. Parliamentary democracy ensures the free choice of representation and it is the very essence of this freedom that the chosen representatives so perform their duties that they prove worthy of the faith and trust that the people have reposed in them. Our democracy can be sustained and the hopes and aspirations of the millions of our people fulfilled only by hard and devoted work in Parliament. I have no doubt that we in this House shall continue to work together in the interest of our People whose welfare will always be our highest concern. I look forward to continued co-operation and assistance from all Members so that the business of the House may be transacted smoothly and the values of parliamentary institutions enhanced.

I once again extend a hearty welcome to all new Members.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

शस्त्रों तथा गोलाबारूद के विषय में आत्मनिर्भरता

499. डा० भाई महावीर :
श्री प्रेम मनोहर : +
श्री जगदीश प्रसाद माथुर :
श्री ना० कृ० शेजवलकर :

क्या रक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

---

* The question was actually asked on the floor of the House by Shri Prem Monohar.

(क) क्या शस्त्रों तथा गोलाबारूद के विषय में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की कोई योजना सरकार के विचाराधीन है;

(ख) यदि हां, तो उसकी मुख्य-मुख्य बातें क्या हैं और इस विषय में अब तक कितनी प्रगति की गई है; और

(ग) इस विषय में पूर्ण आत्म निर्भरता प्राप्त करने का लक्ष्य कब तक पूरा हो जाने की सम्भावना है ?

SELF-SUFEICIENCY IN ARMS AND AMMUNITION

* 499. DR. BHAI MAHAVIR:
SHRI PREM MANOHAR:
SHRI JAGDISH PRASD MATHUR:
SHRI N. K. SHEJWALKAR:

Will the Minister of DEFENCE be pleassed to state :

(a) whether there is any plan under Government's consideration to achieve self-sufficiency in the matter of arms and ammunition;

(b) if so, what are the sailent features thereof and what progress has so far been made in this regard; and

(c) the time by when the target of complete sefl-sufficiency in this regard is likely to be achievd ?]

THE MINISTER OF STATE (DEFENCE PRODUCTION) IN THE MINISTRY OF DEFENCE (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA) : (a) and (b) The Department of Defence Production already have a comprehensive plan for the achievement of self-sufficiency in the matter of arms and ammunition. This plan is revised annually on the basis of the 'Roll-on' concept, taking into accout the revised requirements of the Services.

We have achieved adequate self-sufficiency in respect of small arms, light artillery and their ammunition. For medium artillery weapons and ammunition, which are replacing our traditional weapons and ammunition in this range, indigenous capacity is being progressively established in the country.

(c) No time limit can be fixed for achieving self-sufficiency in the matter of arms and ammunition since the requirements of the Services keep on changing with the rapid advances in Defence technology.]

[**रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन) में राज्य मंत्री (श्री विद्या चरण शुक्ल)** : (क) तथा (ख) : शस्त्रास्त्र तथा गोलाबारूद के संबंध में आत्मनिर्भता प्राप्त करने के लिए रक्षा उत्पादन विभाग के पास पहले से एक समग्र योजना है। इस योजना को प्रतिवर्ष 'चलते रहने' की धारणा से प्रतिवर्ष परिशोधित सेनाओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।

हमने छोटे हथियारों, हल्के आर्टीलरी तथा गोलाबारूद के सम्बन्ध में समुचित आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है। मझोली आर्टीलरी शस्त्रों के लिए तथा गोलावारूद के लिए जो कि हमारे इस परास के रूढ़िगत शस्त्रों को प्रति स्थापित कर रही है, देश में स्वदेशी क्षमता को क्रमशः स्थापित किया जा रहा है।

(ग) रक्षा तकनीक के तेजी से बदलते रहने के कारण सेनाओं की शस्त्रास्त्रों तथा गोलाबारूद के सम्बन्ध में मांगें सदा बदलती रहती हैं अतः आत्मनिर्भरता के लिए कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती है।

श्री प्रेम मनोहर : पाकिस्तान से जो हमारा युद्ध हुआ उसमें इस बात का बिलकुल स्पष्ट हमें पता चला कि बारूद और शस्त्रों की आत्मनिर्भरता कितनी आवश्यक है और यह बड़ी अच्छी बात है कि हर समय जब-जब भी हमारे ऊपर लड़ाई थोपी गई तो हमने इस मामले में

* [ ] Enghlis translation.

* [ ] Hindi translation.

अपनी आत्मनिर्भरता बनाये रखी। तो उसी प्रसंग में मैं मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा कि आज के इस नए बदलते हुए समय में और बदली हुई आवश्यकताओं में क्या सरकार ने एटमबम बनाने की पालिसी पर कोई चेन्ज या बदल करने का कोई निश्चय किया है या इस पर कोई विचार भी कर रही है या नहीं कर रही है ?

श्री विद्या चरण शुक्ल · अध्यक्ष महोदय, जो माननीय सदस्य का मुख्य प्रश्न है, मैं समझता हूं, मूल प्रश्न से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है...

श्री प्रेम मनोहर : क्यों ?

श्री विद्या चरण शुक्ल : इसलिए कि जो अपने इसमें आत्मनिर्भरता के बारे में पूछा है वह ऐसे अस्त्र-शस्त्रों के बारे में पूछा है जो आज हम लड़ाई में उपयोग में ला रहे हैं, जो हमारी सेना के उपयोग में चीजें आ रही हैं। ऐसे अस्त्र-शस्त्र जिनका हमारी सेना ने कभी बिलकुल उपयोग नहीं किया, ऐसे शस्त्रों को लाना है या नहीं, यह बात अलग है। लेकिन तो भी मैं कहना चाहता हूं कि यह हमारी दृढ़ नीति है कि हम अणु-बमों का अपने देश में निर्माण नहीं करना है।

श्री प्रेम मनोहर : तो ऐसी स्थिति में जो हमारे रौमैटीरियल्स है, जैसे थोरियम है, इसका एक्सपोर्ट बंद कर दिया जाए ताकि कम-से-कम एटम-बम हमारे ऊपर काम में न आए क्योंकि हम एटम बम के लिए रौमैटीरियल्स सप्लाई करते है और लड़ाई होगी तो एटम-बम की आशंका हमें बनी रहेगी।

श्री विद्या चरण शुक्ल : माननीय सदस्य को जानना चाहिए कि अणुबम से सम्बन्धित जितनी बातें है ये, जो हमारा एटामिक इनर्जी डिपार्टमेंट है उससे सम्बन्धित हैं, जो डिपार्टमेंट आफ डिफेंस प्रोडक्सन है या मिनिस्ट्री आफ डिफेन्स है, उससे कोई मतलब नहीं है। इसलिए अगर वे जानना चाहते हैं तो सम्बन्धित विभाग से प्रश्न पूछा जाए तो उनको जवाब मिल जाएगा।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : जहां देश को विजयंत टैंक के निर्माण पर गर्व होना चाहिए वहां क्या यह बात सही है कि जिन बड़े हथियारों के लिए पहले हम अमरीका पर निर्भर करते रहे आज हम उनके लिए रूस के ऊपर निर्भर करते हैं ? इस नाते मैं माननीय मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि पिछले 3 वर्षों के पूर्व जिन हथियारों को हम अपने देश में नहीं बना पा रहे थे, पिछले 3 वर्षों के दौरान हमने उनमें से कौन-कौन से हथियार स्वयं निर्माण कर लिए जिससे यह पता चले हम आत्मनिर्भता की ओर जा रहे है। और आपने एटम-बम के लिए कहा कि हम उसे नहीं बनायेंगे। तो क्या कभी नहीं बनाएंगे या अभी नहीं बनाएंगे ? कभी नहीं और अभी नहीं का अंतर हो तो बताइए।

श्री विद्या चरण शुक्ल : इतनी बात तो माननीय सदस्य को भी माननी चाहिए और समझनी चाहिए कि कभी और अभी में कितना अंतर होता है। इस दुनिया मे कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो यह कह सके कि कोई चीज कभी नहीं की जाएगी। तो इस तरह की बातें करना ही बिलकुल गलत है, बेढंगा है। कभी-अभी की बात उठाने से फायदा नहीं है। जो अभी की बात है वह मैं बताए देता हूं। जहां तक आत्मनिर्भरता का सवाल है, माननीय सदस्य बिलकुल गलत धारणा में है कि हम लोग अमरीका पर कभी भी बड़ी भारी मात्रा में निर्भर करते रहे हैं या रूस पर बड़ी भारी मात्रा में निर्भर करते हैं। यह बात ठीक है कि हमने कुछ टेकनिकल सहायता लेकर अपने देश में बड़ी-बडी चीजों का निर्माण किया जैसे कि फाइटर, इन्टरसप्टर हवाई जहाज़ का निर्माण किया। हम रूस से

टेकनिकल सहायता लेकर अपने देश में मिग-विमान बना रहे हैं और आगे हम दूसरे ढंग के, सुधरी किस्म के, मिग विमान जो हमारी वायु सेना के काम और अच्छी तरह आ सकें, बना रहे हैं। पर यह कहना बिल्कुल गलत है जैसा कि आप इसका आशय देखते हैं कि पहिले हमारी सहायता अमरीका वाले करते थे और अब उनके बदले रूस वाले कर रहे हैं। यह जो आपकी मूल धारणा है, यह सर्वथा गलत है। आप इसको पहिले सुधारिये तब हम जवाब को समझेंगे।

DR. K. MATHEW KURIEN . It is reported that the Department of Defence Supplies has located indigenous supplies for 17,000 items used for various defence about equipments. I would like to know the absolute value of the orders placed on indigenous suppliers as import substitutes and the proportion of such orders to the total requirements and also capocity utilisation of the 33 Ordnance Factories and the three Public Sector factories under the Ministry of Defence.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : This is a completely different question that has been raised. I am answering the questions ragarding Defence production and he is asking about Defence supplies. Any way I shall give him some information about this As far as the Department of Defence Supplies is concerned, as he has rightly said, we have large amount of orders placed on various indigenous manufacturers for equipment which were hitherto imported. The total value of this---I am speaking subject to correction---goes over hundred crores within the space of 7 years that this Department has been in existance. Our plan for next year is to place orders for various items which will total us to about Rs. 50 crores which will be placed for development on our indigenous industries and we hope that out of this we hope to get supplies of materials to the extent of Rs. 24 crores.

श्री ओम प्रकाश त्यागी : मैं आपके द्वारा यह जानना चाहता हूं, क्योंकि अभी मंत्री जी ने कहा कि हम भी एटम-बम नहीं बनायेंगे। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या हमारे साइन्टिस्टों में एटम बनाने की पूर्ण क्षमता या योग्यता है या नहीं कि आवश्यकता पड़ने पर अगर उन्हें बनाने के लिए आदेश दिये जायं तो वे उसको बना सके। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि कितने दिनों में यह क्षमता उनमें प्राप्त हो सकेगी ?

SHRI MAHAVIR TYAGI : On a point of order.

श्री विद्या चरण शुक्ल : माननीय सदस्य श्री त्यागी जी जो एक पुराने पार्लियामेन्टेरियन हैं; मैंने पहिले ही बतला दिया है कि...

श्री सभापति : आप त्यागी नहीं हैं, आप तो महावीर त्यागी हैं।

श्री विद्या चरण शुक्ल : आप तो महावीर हैं और वे ओम प्रकाश हैं। मैंने अभी यह कहा था कि यह जो एटौमिक इनर्जी विभाग है वह इस चीज से सम्बन्ध रखता है। अगर यह प्रश्न उस विभाग के मंत्री से पूछा जाय तो उनसे जवाब मिल जायेगा।

SHRI KRISHAN KANT : While we are very much proud of the Defence production in this country because of which we could wage the last war with our own equipmentr and there can be no question of peing self-sufficient in arms or in developing science and technology, I would ask whether the now Commission on Electronics is going to look after the Defence needs of electronics or the Ministry of Defence is looking to it. Secondly...

MR. CHAIRMAN : No secondly.

SHRI KRISHAN KANT : I am not asking about nuclear bombs. Small nuclear bombs may not be atom bombs. May I know whether the Government is looking at the growing needs for nuclear implements, not atom bombs but nuclear driven anti-submarines and naval vessels and, if so, what is the Government doing ?

MR. CHAIRMAN : Mr. Krishan Kant, we have decided that only one question should be asked. I am informing you because you were not here for some time.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: As the Member may be knowing, previously this Department of Electronics was Part of the Department of Defence Supplies Now it has been out under the control of the Cabinet Secretariat and therefore it looks into the overall development of electronics in the country which includes development of Defence electronics also.

But we have our own electronic research establishments and electronic production facilities which are specially directed to and which specialise in defence production Regarding the second question about nuclear submarines etc, first we have to go into production of Con-ventional submarines and only then the stage of consideration of other kinds of submarines will arise.

श्री चक्रपानी शुक्ल : क्या भारत सरकार इस सम्बन्ध मे स्वावलम्बी होने के लिए और प्रगति करने के लिए कोई रक्षा संस्थान मध्य प्रदेश मे, जो अत्यन्त सुरक्षित स्थान है, बनाने का विचार कर रही है ?

श्री विद्या चरण शुक्ल : जैसा कि माननीय सदस्य को मालूम है, मध्य प्रदेश मे अभी रक्षा उत्पादन के चार बडे-बडे संस्थान है। मै यह नही कह रहा कि मध्य प्रदेश मे आगे चल कर और नही हो सकते, पर जहा पर उनको रखना है या नही रखना है इस सम्बन्ध मे बहुत सी तकनीकी बातो और सुरक्षा सम्बन्धी चीजो को ध्यान मे रखकर निर्णय करना पडता है और हमारी नीति और रीति यह रही है कि हम इसके लिए टैक्नीकल कमैटी नियुक्त करते है जो सब बातो पर सोच-विचार कर जगह का सुझाव देती है और उसके अनुसार हम लोग जगह का चुनाव कर लेते है। मै माननीय सदस्य को बताना चाहूगा कि मध्य प्रदेश में जो 4 संस्थान पहले से है उनके अतिरिक्त पाचवा डिफेंस प्रोडक्शन का बडा भारी कारखाना हम इटारसी मे लगा रहे है।

SHRI N. G. GORAY: Sir, the last war has revealed some of the shortcomings in our defence production I would like to ask the Ministsr whether Petya class attack boats and submarines are likely to be developed by our own naval dockyards because it is they which were instrumental in delivering the most severe attacks on the Karachi harbour?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA. As far as the shortcomings of our defence equipment are concerned, this matter is looked into from time to time We have drawn lessons from our experience during the last hostilities and I can assure hon Members that we will take full advantage of all those lessons and correct the shortcomings. About the particular question about Petya class attack boats and other things these are matters which we keep under constant review and consideration

SHRI T. V ANANDAN: Sir, from the reply of the hon Minister it is found that the country is self-sufficient in the matter of arms and ammunition through imports and indigenous production. Indigenous production is dependant upon the various defence production units If the defence production units are undisturbed and free from strikes and lock-outs...

MR CHAIRMAN You put your question please.

SHRI T. V. ANANDAN I think the Minister can be proud but as there are many strikes and lock-outs in our defence production units just for mere recognition of trade unions, what action is the Defence Ministry contemplating to take to give recognition to all the trade unions functioning under registration?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: Sir, barring a few exceptions we have not been plagued with any labour difficulties and I must give my compliments to the defence workers who did extremely well not only during the critical period that we have just passed but also previously. I would say that the defence workers have by and large behaved with a great sense of responsibility and we have not had much problems with them. As far as recognition is concerned, any union which meets with the norms that we lay down for recognition is generally given recognition.